दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रेमघन की छाया स्मृति' संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया है ?

उत्तर— यह संस्मरण भारतेंदु मंडल के प्रमुख कवि चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' के बारे में है जिसमें उनके व्यक्तित्व के निम्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है–

(i) **हिन्दुस्तानी रईस--** उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' एक अच्छे-खासे हिन्दुस्तानी रईस थे और उनके स्वभाव में वे सभी विशेषताएँ थीं जो रईसों में होती हैं।

(ii) **भारतेंदु मंडल के कवि--** प्रेमघन, भारतेंदु मंडल के कवि थे और भारतेंदु जी के मित्रों में उनकी गिनती थी। वे मिर्जापुर में रहते थे और उनके घर पर साहित्यिक गोष्ठियाँ आदि होती रहती थीं।

(iii) **अपूर्व वचन भंगिमा–** प्रेमघन जी की बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम भिन्न था। जो बातें उनके मुख से निकलती थीं उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

(iv) मौलिक विचारक– प्रेमघन जी मौलिक विचारक थे और उनके विचारों में दृढ़ता रहती थी। नागरी को वे लिपि न मानकर भाषा मानते थे। वे मिर्जापुर को 'मीरजापुर' लिखते थे और उसका अर्थ करते थे-मीर = समुद्र, जा = पुत्री + पुर अर्थात् समुद्र की पुत्री = लक्ष्मी, अतः मीरजापुर = लक्ष्मीपुर।

2. 'देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की निराशा के कारणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर---- देवसेना की निराशा के कई कारण हैं जिनमें दो कारण मुख्य हैं। प्रथम तो हूणों के आक्रमण के कारण उसके भाई बन्धुवर्मा एवं परिवार के सदस्यों को वीरगति प्राप्त हुई और जीवनभर अकेली रहकर उसे संघर्ष करना पड़ा।

दूसरा मुख्य कारण यह था कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी परन्तु उसे स्कन्दगुप्त का प्रेम प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि वह विजया से प्रेम करता था। जब स्कन्दगुप्त ने उसके सामने प्रेम प्रस्ताव रखा तब तक वह आजीवन अविवाहित रहने का व्रत ले चुकी थी। स्कन्दगुप्त के व्यवहार के कारण वह निराश हो गई थी।

अकेली रहने के कारण उसे लोगों की कुदृष्टि का सामना करना पड़ा। स्कन्दगुप्त की उपेक्षा के कारण उसे भीख माँगने का कार्य भी करना पड़ा। इसी से वह जीवन में हार गई और निराश हो गई थी।

3. सैलानी (शेखर और रूप सिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोज़गार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। क्या आप भी बाल-मजदूरों के बारे में सोचते हैं ?

उत्तर— शेखर कपूर और रूपसिंह हिमांग पहाड़ की तलहटी में स्थित गाँव माही जा रहे थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। लड़का महीप उनको घोड़ों पर बैठाकर ले जा रहा था और स्वयं शेखर के घोड़े को पकड़कर आगे-आगे पैदल चल रहा था। वे सोच रहे थे कि इतनी छोटी उम्र में उसे घोड़ों पर मुसाफिरों को पहाड़ी स्थानों पर लाने-ले जाने का जोखिम भरा कठिन काम करना पड़ रहा है। पेट के लिए क्या-क्या करना पड़ता है? बर्फ गिरने के दिनों में यह क्या काम करता होगा? इसके परिवार में और कौन-कौन लोग होंगे? इत्यादि हमारी दृष्टि में भारत में अनेक बच्चो को अपना बचपन पेट भरने के लिए पैसा कमाने में गँवाना पड़ता है। स्कूल जाकर पढने, खेलने-कूदने और निश्चित होकर घूमने की उम्र उनको कठोर श्रम करने में बितानी पडती है। भारत में बाल-मजदूरी की समस्या अत्यंत विकट है। गैर-कानूनी होने पर भी यह आज भी प्रचलित है, जिसका कारण गरीबी है । इस समस्या के समाधान के लिए सरकार के साथ ही हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। कोरी सहानुभूति का प्रदर्शन उचित नहीं है।

4. 'चार हाथ' लघुकथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। कैसे? इस कथन का अभिप्राय कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- असगर वजाहत की लघु कथा 'चार हाथ' का उद्देश्य इस तथ्य को उजागर करना है कि मिल-मालिक मजदूरों का शोषण करते हैं। वे उत्पादन बढ़ाने के लिये निर्दयता की सीमाओं का भी उल्लंघन कर जाते हैं। एक मिल-मालिक ने सोचा कि यदि मजदूरों के चार हाथ हों तो उत्पादन दुगुना हो सकता है। तरह-तरह के उपाय करके उसने मजदूरों के चार हाथ लगाने का प्रयास किया पर सफलता न मिली। लोहे के हाथ जबरदस्ती मजदूरों के फिट करवा दिए परिणामतः मजदूर मर गये। अचानक उसके दिमाग में यह बात कौंध गई कि यदि मजदूरी आधी कर दूँ और दुगुने मजदूर काम पर रख लूँ तो उतनी ही मजदूरी में उत्पादन दोगुना हो जायेगा। उसने यही किया। बेचारे लाचार मजदूर आधी मजदूरी पर काम करने लगे क्योंकि उनके पास और कोई चारा न था। पूँजीपति संवेदनहीन हैं, वे अधिक से अधिक लाभ कमा रहे हैं और मजदूरों की लाचारी का फायदा उठा रहे हैं। लेखक का दृष्टिकोण इस लघु कथा में पूर्णतः प्रगतिवादी है।

5. लेखक के द्वारा शंकर भगवान की मूर्ति को गाँव वालों को क्यों लौटा दिया गया? 'कच्चा चिट्ठा' अध्याय के आधार पर विस्तार से उत्तर लिखिए।

उत्तर- व्यास जी किसी गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे रखी चतुर्मुखी शिव की मूर्ति को उठा लाए थे जिसकी पूजा-अर्चना गाँव वाले करते थे। जब गाँव वालों को इस बात का पता चला कि शिवजी अंतर्धान हो गए हैं तो उन्होंने ठान लिया कि जब तक शिवजी वापस नहीं आ जाएँगे तब तक वे उपवास पर रहेंगे और एक बूंद पानी तक न पियेंगे। गाँव के मुखिया ने व्यास जी के कार्यालय में आकर इस सम्बन्ध में उन्हें सूचित किया और विनम्र अनुरोध किया कि आप हमें शिवजी की उस मूर्ति को वापस ले जाने की आज्ञा दें। जब व्यास जी ने वह मूर्ति उन्हें वापस कर दी तभी गाँव वालों ने अपना उपवास तोड़ा। व्यास जी लिखते हैं कि यदि उन्हें पता होता कि गाँव वालों की इतनी ममता उस मूर्ति पर है तो वे उसे उठाकर लाते ही नहीं।

6. हिमालय किधर है? इस प्रश्न का बालक ने क्या उत्तर दिया और क्यों? क्या आपकी दृष्टि में यह उत्तर सही है? विस्तार से उत्तर दीजिए।

उत्तर- केदारनाथ सिंह की 'दिशा' कविता लघु आकार की है और बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। इसमें बच्चों की निश्छलता और स्वाभाविक सरलता का मार्मिक वर्णन है। कवि ने कविता के माध्यम से यथार्थ को परिभाषित किया है। कवि पतंग उड़ाते बच्चों से सहज रूप में पूछता है कि हिमालय किधर है ? बच्चे भी अपनी सहज प्रवृत्ति के अनुसार उत्तर देते हैं, कि हिमालय उधर है जिधर उनकी पतंग उड़ रही है। कवि सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति का यथार्थ अलग होता है। बच्चे यथार्थ को अपने ढंग से देखते हैं। कवि बालकों के इस सहज ज्ञान से प्रभावित हो जाता है। कवि की धारणा है कि हम बच्चों से भी कुछ न कुछ सीख सकते हैं। कवि के विचार से हम सहमत हैं क्योंकि बच्चे की दुनिया छोटी होती है, इसलिए वह अपने अनुसार सोचता है। उसे हर चीज पतंग की दिशा में दीख रही थी।

7. 'एक कम' कविता के आधार पर स्वतन्त्रता पश्चात् भारतवर्ष की स्थिति का चित्रण विस्तार से कीजिए।

उत्तर- कवि ने आजादी के बाद भारत के अनेक लोगों को आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होते देखा है। छल-कपट, धोखाधड़ी, विश्वासघात, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता एवं अन्याय के बल पर लोगों ने अपनी स्थिति को सुधारा है। अनैतिक तरीकों से लोग धनवान बने हैं और दूसरों को धक्का देकर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को ही उन्होंने अपनी उन्नति का साधन बनाया है। इस पंक्ति में एक व्यक्ति कम है। वह है भिखारी। हाथ फैलाने वाले अर्थात् भीख माँगने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार इसलिए कहा है क्योंकि अन्य लोगों की तरह वह धोखाधड़ी, बेईमानी या रिश्वतखोरी नहीं कर सका

इसीलिए वह धनवान नहीं बन सका और आज इतना गरीब है कि पेट भरने के लिए उसे दूसरों के आगे हाथ फैलाना पड़ रहा है।

8. 'हमारे आज के शहर नियोजकों और इंजीनियरों तथा पुरातन नियोजकों में क्या अंतर बताया गया है? 'अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में' अध्याय के आधार पर विस्तृत उत्तर लिखिए।

उत्तर- रिनेसां अर्थात् पुनर्जागरण काल योरोप में बहुत पहले नहीं आया था। यह बीसवीं शताब्दी में वहाँ आया। इसके कारण ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति हुई और योरोप में तकनीकी ज्ञान बढ़ा। वहाँ से यह विश्व के अन्य देशों में पहुँचा। विदेशियों को यह भ्रम सदा रहा है कि भारत को सभ्यता उन्होंने ही सिखाई है। सत्य यह है कि भारत की सभ्यता तथा संस्कृति प्राचीनकाल में भी अत्यन्त विकसित थी। उज्जैन के शासक विक्रमादित्य ईसा से भी पहले हुए थे। वे एक प्रतापी तथा कुशल राजा थे। महाराजा भोज और मुंज भी कुशल प्रजापालक शासक थे। राज्य की समृद्धि में पानी के महत्त्व से वे अवगत थे। उन्होंने मालवा में तालाब खुदवाए थे, कुओं तथा बावड़ियों का निर्माण कराया था। वे जानते थे कि पठार के पानी को रोककर रखने के लिए इन विकास कार्यों की जरूरत है। इससे बरसात का पानी रुका रहता था और गर्मियों में लोगों के काम आता था। इससे भूगर्भ के जल का स्तर भी सुरक्षित रहता था। उसका अनावश्यक दोहन भी नहीं होता था।

9. 'तुम खेल में रोते हो', इस कथन को सुनकर सूरदास पर क्या प्रभाव पड़ा? 'सूरदास की झोंपड़ी' अध्याय के आधार पर विस्तार से उत्तर लिखिए।

उत्तर- झोंपड़ी के जलने से सूरदास अत्यन्त दुःखी था। पूरी राख को तितर-बितर करने पर भी उसे अपने संचित रुपये अथवा उनकी पिघली हुई चाँदी नहीं मिली थी। उसकी सभी योजनाएँ इन रुपयों के माध्यम से ही पूरी होनी थीं। अब वे अधूरी ही रहने वाली थीं। दुःखी और निराश सूरदास रोने लगा था। अचानक उसके कानों में आवाज आई "तुम खेल में रोते हो।" इन शब्दों ने सूरदास की मनोदशा को एकदम बदल दिया। उसने रोना बन्द कर दिया। निराशा उसके मन से दूर हो गई। उसका स्थान विजय-गर्व ने ले लिया। उसने मान लिया कि वह खेल में रोने लगा था। यह अच्छी बात नहीं थी। वह राख को दोनों हाथों से हवा में उड़ाने लगा।

10. 'पहचान' लघु कथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–'पहचान' शीर्षक लघु कथा में निम्नलिखित व्यंग्य निहित हैं–

(i) हर राजा गूंगी, बहरी और अंधी प्रजा पसंद करता है।

(ii) हर राजा चाहता है कि उसकी प्रजा बेजुबान (गूंगी) हो और उसके खिलाफ आवाज न उठाये।

(iii) प्रजाजनों के एकजुट होने से राजा को हानि होने की संभावना है इसलिये वह उन्हें एकजुट नहीं होने देता।

(iv) राजा प्रजाजनों को यह झाँसा देता है कि उसकी हर आज्ञा राज्य के हित में है और राज्य को स्वर्ग बनाने के लिये है।

(v) छद्म प्रगति और विकास के बहाने धीरे-धीरे राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेता है।

(vi) राजा लोगों को यह झाँसा देता है कि वह उनके जीवन को स्वर्ग जैसा बना देगा पर वास्तव में प्रजा का जीवन और भी खराब हो जाता है। हाँ, राजा अपना जीवन स्वर्ग जैसा अवश्य बना लेता है।

11. गीतावली से संकलित पद 'राघौ एक बार फिरि आवौ' में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस पद से यह व्यक्त होता है कि माता कौशल्या अपने पुत्र राम के वियोग में अत्यन्त व्याकुल हैं। वात्सल्य वियोग से युक्त इस पद में राम के दर्शन हेतु कौशल्या की व्याकुलता व्यंजित है । भले ही वे कह रही हों कि तुम्हारे प्रिय घोड़े तुम्हारे चले जाने से दुखी हैं अतः तुम आकर उन्हें अपने दर्शन दे दो, पर वास्तविकता यही है कि वे स्वयं राम को देखने के लिए व्याकुल हैं। राम का पशु प्रेम भी व्यंजित है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में भी लिखा है 'जासु वियोग विकल पसु ऐसे'। उसी प्रकार की बात कवि ने यहाँ कही है कि राम के वियोग में उनके । घोड़े इस प्रकार दुर्बल हो गए हैं जैसे पाला पड़ने से कमल मुरझा जाते हैं। ऐसी ही दशा सभी अयोध्यावासियों की राम के वियोग में हो रही है। इस पद में राम के हृदय की करुणा व्यक्त हुई है। इस पद से संदेश मिलता है कि राम अत्यन्त उदार हैं। इससे माता कौशल्या का वात्सल्यभाव भी व्यक्त हुआ है।

12. "तो मुइला, इसी तरह में भी आ बैठा मौत की इस पीठ पर, उसी की जिसने मेरा सब कुछ निगल लिया था.....। भूपसिंह के वक्तव्य के पीछे कही गई गिद्ध और चिड़िया की कहानी कौन-सी है? लिखिए।

उत्तर-- रूप ने अपने भाई भूपसिंह से हिमांग पहाड़ पर चढ़कर बसने का कारण पूछा । भूप ने उसको एक नन्ही चिड़िया की कहानी सुनाई। चिड़िया से गीध ने कहा कि वह उसे खा जायेगा। चिड़िया ने

डरकर पूछा–'क्यों? गीध ने कहा–क्योंकि वह उससे ऊँचा नहीं उड़ सकती। नन्ही चिड़िया ने धैर्यपूर्वक पूछा 'अगर मैं तुमसे ऊँचा उड़कर दिखा दूँ तो?' गीध ने उसके बचकानेपन पर हँस कर कहा 'तो नहीं खाऊँगा।' मुकाबला शुरू हो गया। गीध अपने लम्बे डैने फैलाकर खूब ऊँचा उड़ा। चिड़िया को डर लगा, किन्तु वह धैर्यपूर्वक उड़ती रही। मरना तो है ही फिर मौत से लड़कर क्यों न मरूँ? चिड़िया ने सोचा और पूरी ताकत लगाकर उड़ी। लगा कि प्राण निकल जाएँगे। अपनी पूरी ताकत से उड़कर चिड़िया गीध की पीठ पर जा बैठी। गीध अपनी ताकत के घमंड में आकाश में खूब ऊँचा उड़ा। मगर अब चिड़िया को ल्या डर नहीं था। वह हर हाल में उससे ऊँचाई पर कुल थी, मौत की पीठ पर ही जा बैठी थी। भूप ने यह कहानी अपनी बात, रूप को है। समझाने के लिए सुनाई थी। जिस पहाड़ के कारण भूप का सब कुछ तबाह हुआ था, वह उसी के ऊपर आ बैठा था, वह मौत की पीठ पर आ बैठा था। उसकी स्थिति उस चिड़िया के ही समान थी।

13. 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'दूसरा देवदास' कहानी में लेखिका 'ममता कालिया' ने हर की पौड़ी हरिद्वार की पृष्ठभूमि में युवा मन की भावुकता, संवेदना तथा वैचारिक चेतना को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी का नायक संभव दिल्ली का रहने वाला एम. ए. पास युवक है। माता-पिता ने उसे नानी के घर हरिद्वार भेजा है जिससे वह वहाँ जाकर गंगा के दर्शन कर ले और बेखटके परीक्षा में सफलता प्राप्त कर ले। इसी उद्देश्य से वह हर की पौड़ी पर स्नान करने आता है जहाँ पुजारी से चन्दन लगवाते समय उसकी भेंट पारो नामक लड़की से होती है। पुजारी भ्रम से उन दोनों को पति-पत्नी समझकर आशीर्वाद देता है। लड़की छिटककर उससे दूर खड़ी हो जाती है। दूसरे दिन वह घाट पर गया जहाँ उसकी भेंट पारो के भतीजे मन्नू से होती है। लौटते समय उसे वह लड़की दूसरी केबिलकार में अपने भतीजे मन्नू के साथ दिखाई देती है। मन्नू उनका परिचय कराता है ये हैं मेरी पारो बुआ और ये मेरे दोस्त ....'। 'संभव देवदास' कहकर संभव वाक्य पूरा करता है। वास्तव में वह पारो से प्रेम करने लगा है। यह पता चलने पर कि इस लड़की का नाम पारो है वह अपना नाम बताता है–संभव देवदास। कहानी में लेखिका के प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित किया है।

14. 'अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान-गटी' इस पंक्ति के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– काव्य-सौन्दर्य (भाव-पक्ष)– यहाँ पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रशंसा तो है ही साथ ही यह भी व्यंजित है कि यहाँ ऋषि-मुनि, साधु-संन्यासी निवास करते हैं अतः पंचवटी में जो भी रहता है उसे

इन सबका सत्संग सुलभ होता है। इनके द्वारा जो ज्ञान चर्चा यहाँ होती है उसका लाभ अनायास सबको मिलता है इसलिए पाप नष्ट हो जाते हैं और हृदय में ज्ञान प्रकट हो जाता है।

कला-पक्ष-- कवि ने यहाँ शिल्प चमत्कार दिखाया है। अघओघ की बेरी में रूपक. कटी बिकटी में सभंगपद यमक, बिकरी निकटी प्रकटी में पदमैत्री, ज्ञान गटी में रूपक अलंकार का सौन्दर्य है। केशवदास की भाषा ब्रजभाषा है तथा यहाँ सवैया छन्द का प्रयोग किया गया है। कवि ने शब्द चमत्कार दिखाने का प्रयास इस पंक्ति में किया है। 'टी' के प्रयोग से ध्वन्यात्मक सौन्दर्य प्रकट किया गया है।

15. यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी, किसके बारे में कहा गया है? क्यों? सूरदास के सन्दर्भ में आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- सूरदास बैठा रहा। लोग चले गए थे और धीरे-धीरे झोंपड़ी की आग ठंडी हो गई थी । तब वह उठा और अनुमान से द्वार की ओर से झोंपड़ी में घुसा। उसने उसी दिशा में राख को टटोलना शुरू किया, जहाँ छप्पर में पोटली रखी थी। निराशा, उतावलेपन और अधीरता से उसने सारी राख छान डाली परन्तु पोटली नहीं मिली।

उसने एक-एक कर रुपये जोड़े थे। उसने सोचा था कि उन रुपयों से वह गया जाकर अपने पितरों का पिंडदान करेगा। रोटी अपने हाथों से बनाते पूरा जीवन बीत गया। अब वह अपने पौत्र मिठुआ की शादी करेगा और चैन की रोटी खायेगा। झोंपड़ी जलने से उसके सारे अरमान ही जल गए थे। यह फूस की राख उसकी इन्हीं अभिलाषाओं की राख थी

16. बड़ी बहुरिया का संदेश देने में हरगोबिन ने क्या-क्या शारीरिक और मानसिक कष्ट सहे और क्यों? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

अथवा

'कच्चा चिट्ठा' के आधार पर प्रयाग संग्रहालय को 'ब्रजमोहन व्यास' के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-- हरगोबिन ईमानदार एवं दृढ़-प्रतिज्ञ है। प्रथमतः तो वह बड़ी बहू के संदेश को लेकर बहुत 'मानसिक उलझन में हो गया। अगर वह संवाद ज्यों का त्यों देगा तो गाँव की बहुत बेइज्जती होगी। संवाद दिए बिना वहाँ से लौटते समय राह खर्च पास में न होने पर भी उसने बड़ी बहू के मायके से राह खर्च नहीं लिया यद्यपि बड़ी बहू के भाई ने राह खर्च के लिए पूछा था। कटिहार तक तो वह टिकट लेकर आ गया पर आगे की यात्रा के लिए पैसे न थे अतः वह बीस कोस पैदल चलकर भूखा-

प्यासा अपने गाँव पहुँचा। उसने बिना टिकट रेलयात्रा करना उचित न समझा। उसके पास बड़ी बहू की माँ जी द्वारा भिजवाया बासमती धान का चूड़ा था पर वह उस अमानत में से कैसे खा सकता था ? भूख, प्यास और थकान से बेहाल होकर वह जब गाँव पहुँचा तो बेहोश हो गया। यह सब उसने गाँव की बड़ी बहू के लिए किया था, क्योंकि वह उनका बहुत आदर करता था।

17. 'यह दीप अकेला' कविता का मूलभाव लिखिए।

अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला' की कविता 'सरोज स्मृति' की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– दीपक अकेला है। वह दीपों की पंक्ति की अपेक्षा एक लघु इकाई है। फिर भी वह कम्पित नहीं होता। वह अपनी लौ को ऊपर करके गर्व के साथ जलता है। उसका अपना एक महत्त्व है, अपना पृथक् अस्तित्व है। इसलिए अकेलेपन में भी सशोभित है। उसका जलना सार्थक है। उसका जलना समूह के लिए विशेष महत्त्व रखता है। वह समाज के लिए आत्मत्याग करने को भी तत्पर रहता है। समाज के सम्मुख मानव अत्यन्त लघु है। दीपक उसी का प्रतीक है। लघु मानव समाज का अंग होकर भी अपना एक विशिष्ट अस्तित्व रखता है। लघु मानव समाज के किस अंग के साथ जुड़े, इसका निर्णय वह स्वयं करता है। उसे बलपूर्वक समाज के किसी वर्ग के साथ जोड़ा नहीं जा सकता। वह स्वतंत्र है। वह अपने कार्यों द्वारा समाज का हित करता है। यही इस कविता का प्रतीकार्थ है।

अज्ञेय प्रयोगवाद के जनक हैं। 'यह दीप अकेला' एक प्रयोगवादी कविता है। इस कविता में नये प्रतीक, नये उपमान, नये बिम्ब और नये छन्द का प्रयोग हुआ है। उनकी अभिव्यक्ति भी नवीन है। भाषा में भी नवीनता है। इसलिए कह सकते हैं कि 'यह दीप अकेला' एक प्रयोगवादी कविता है।

18. "तो हम सौ लाख बार बनाएँगे।" इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो हमें सूरदास से प्राप्त होते हैं?

उत्तर-- 'सूरदास की झोंपड़ी' का नायक एवं प्रमुख पात्र सूरदास ही है। उसकी झोंपड़ी जला दी जाती है और जीवन-भर की संचित कमाई चोरी हो जाती है। वह निराश, उदास और दुःखी है। मिठुआ के पूछने पर वह अपनी झोंपड़ी को बार-बार बनाने का निश्चय प्रकट करता है और कहता है–"तो हम सौ लाख बार बनाएँगे।" इस कथन के सन्दर्भ में सूरदास के चरित्र की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. दयालु और सहानुभूतिपूर्ण–सूरदास दयालु और सीधा-सच्चा मनुष्य है। सुभागी को पिटता देख वह उससे सहानुभूति रखता है और उसे भैरों की पिटाई से बचाता है। वह गाँव के अन्य जनों की सहायता के लिए भी तत्पर रहता है।

2. सहनशील- सूरदास अत्यन्त सहनशील है। यह जानकर भी कि भैरों ने उसकी झोंपड़ी जलाई है तथा रुपये चुराये हैं, वह कुछ नहीं कहता। अपने ऊपर लगाए गए लांछन को भी वह शांत मन से सहन करता है।

3. भाग्यवादी-- सूरदास भाग्य पर विश्वास करता है। वह मानता है कि मनुष्य को पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम भोगना पड़ता है।

4. आत्म-विश्वास–- सूरदास आत्म विश्वास की भावना से भरा हुआ है। रुपये चोरी हो जाने पर वह अपनी योजनाओं के अपूर्ण रह जाने से चिन्तित तो है, परन्तु फिर से रुपया कमाकर उन्हें पूरा करने का विश्वास भी उसको है।

5. विजय-गर्व से भरपूर–- झोंपड़ी जलने और चोरी हो जाने से उत्पन्न निराशा के भाव सूरदास के मन में स्थायी नहीं हैं। बच्चों के मुख से सुनकर कि खेल में रोना अच्छी बात नहीं होती, वह तत्काल इस मनोदशा से स्वयं को मुक्त कर लेता है और उसका मन इस आशा से भर उठता है कि यदि कोई उसकी झोंपड़ी में सौ लाख बार भी आग लगाएगा तो वह उसे बार-बार बनाएगा।

19. 'शेर' लघुकथा के व्यंग्य को आज के सामाजिक राजनीतिक संदर्भो में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– शेर इस लघुकथा में व्यवस्था का प्रतीक है। लेखक ने इसके माध्यम से हमारी व्यवस्था (शासनतंत्र) पर व्यंग्य किया है। झूठे प्रचार के माध्यम से शासन जनता को खुशहाली का झाँसा देता है पर जनता का कुछ भी भला नहीं होता। सब कुछ शासकों की जेब में समा जाता है। लोगों को तरह-तरह के सपने दिखाए जाते हैं कि तुम्हें अच्छा भोजन मिलेगा, जीवन खुशहाल होगा और सबको रोजगार मिलेगा। लोग इन प्रलोभनों में फंसकर शासन की बात मानकर उसका सहयोग करते हैं। जब तक जनता सत्ता की आज्ञा का पालन करती है तब तक वह खामोश रहती है किन्तु जब कोई व्यवस्था पर उँगली उठाता है तब विरोध में उठे स्वर को वह कुचलने का प्रयास करती है। इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने सुविधाभोगियों, छद्म क्रांतिकारियों, अहिंसावादियों और सहअस्तित्ववादियों के ढोंग पर प्रहार किया है।

20. 'कार्नेलिया का गीत' में भारत की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है? उनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-- प्रस्तुत गीत में प्रसाद जी ने भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक महत्त्व का वर्णन किया । 'है। प्रातः काल सूर्य की प्रथम किरणें जब भारत की भूमि पर पड़ती हैं तब प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। उस समय प्रकृति मधुमय दिखाई देती है। यहाँ दूर देशों से आने वाले व्यक्तियों को आश्रय मिलता है। यह देश सभी की शरणस्थली है। यहाँ के मनुष्य दयावान और करुणावान हैं तथा सभी के प्रति सहानुभूति रखते हैं। यहाँ के लोग सभी को सुख पहुँचाने वाले हैं। भारत में विविध सभ्यता-संस्कृति, रंग-रूप, आचार-विचार एवं धर्म वाले प्राणियों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार कवि ने इस कविता में भारत की अनेक विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

21. सूरदास की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए और आपको इस पात्र से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर-- सूरदास के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. दयालु और सहानुभूतिपूर्ण–सूरदास दयालु और सीधा-सच्चा मनुष्य है। सुभागी को पिटता देख वह उससे सहानुभूति रखता है और उसे भैरों की पिटाई से बचाता है। वह गाँव के अन्य जनों की सहायता के लिए भी तत्पर रहता है।

2. सहनशील- सूरदास अत्यन्त सहनशील है। यह जानकर भी कि भैरों ने उसकी झोंपड़ी जलाई है तथा रुपये चुराये हैं, वह कुछ नहीं कहता। अपने ऊपर लगाए गए लांछन को भी वह शांत मन से सहन करता है।

3. भाग्यवादी-- सूरदास भाग्य पर विश्वास करता है। वह मानता है कि मनुष्य को पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम भोगना पड़ता है।

4. आत्म-विश्वास–- सूरदास आत्म विश्वास की भावना से भरा हुआ है। रुपये चोरी हो जाने पर वह अपनी योजनाओं के अपूर्ण रह जाने से चिन्तित तो है, परन्तु फिर से रुपया कमाकर उन्हें पूरा करने का विश्वास भी उसको है।

5. विजय-गर्व से भरपूर–- झोंपड़ी जलने और चोरी हो जाने से उत्पन्न निराशा के भाव सूरदास के मन में स्थायी नहीं हैं। बच्चों के मुख से सुनकर कि खेल में रोना अच्छी बात नहीं होती, वह तत्काल इस मनोदशा से स्वयं को मुक्त कर लेता है और उसका मन इस आशा से भर उठता है कि यदि कोई उसकी झोंपड़ी में सौ लाख बार भी आग लगाएगा तो वह उसे बार-बार बनाएगा।

22. पाठ के आधार पर हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती का भावपूर्ण वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– हर की पौड़ी पर गंगा जी के अनेक मंदिर है। हर मन्दिर पर लिखा है– गंगा जी का प्राचीन मन्दिर। शाम का समय है। पंडित-पूजारी गंगा जी की आरती की तैयारी करते में व्यस्त हैं। पीतल की नीलांजलि (आरती) में हजारों बत्तियाँ घी में भिगोकर रखी गई है। गंगा सभा के स्वयंसेवक खाकी वरदी में मुस्तैदी से घूम रहे हैं और वे सबको शांत होकर सीढ़ियों पर बैठने के लिए कह रहे है। कुछ भक्तों ने स्पेशल आरती बोल रखी है अर्थात् एक सौ एक या एक सौ इक्यावन रुपए वाली आरती। अचानक हजारों दीप जल उठते हैं। पंडितगण अपने आसन से उठ खड़े होते हैं। हाथ में अंगोछा लपेटे पचमंजिली नीलांजलि पकड़ते हैं और आरती शुरू हो जाती है। पहले पुजारियों के भरीए कंठ से समवेत स्वर उठता है–जय गंगे माता, जो कोई तुझको ध्याता, सारे सुख पाता, जय गंगे माता। फिर भक्तों का समवेत स्वर गूंजता है

23. निम्न पंक्तियों के भावपक्ष एवं कलापक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए-

श्रृंगार, रहा जो निराकार,

रस कविता में उच्छ्वसित-धार

गाया स्वर्गीया-प्रिया-संग-

भरता प्राणों में राग-रंग,

रति-रूप प्राप्त कर रहा वही,

आकाश बदल कर बना मही।

उत्तर-- (क) **भावपक्ष--** निराला जी कहते हैं कि मैंने तुम्हारे शृंगार में उस शृंगार को देखा जो मेरे काव्य के रस में छिपा रहता है और सहस रसधारा के रूप में प्रवाहित होता रहता है। मेरी कविता में जो भावधारा प्रवाहित हो रही थी और जिसे मैंने अपनी स्वर्गीया पत्नी के साथ गाया था वह आज भी दाम्पत्य सुख के रूप में समस्त विश्व में व्याप्त हो रही है। लगता है वह रंग-रूप आकाश से उतर आया है और तेरे शृंगारिक रूप में साकार हो उठा है।

(ख) कलापक्ष--- उपर्युक्त पंक्तियाँ निराला की कल्पना का सुन्दर उदाहरण हैं। सरोज के सौन्दर्य का साकार चित्रण किया गया है। सामासिक शब्दावली का प्रयोग है। तत्सम शब्दों का प्रयोग है। राग-रंग, रति-रूप में अनुप्रास अलंकार है। भाषा में प्रसाद गुण है। मुक्त छन्द और वर्णनात्मक शैली है।

24. 'आरोहण' कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर—'आरोहण' कहानी में दो ही नारी पात्र हैं। एक है शैला जो पहले भूप सिंह की प्रेमिका तथा बाद में पत्नी बनती है। दूसरी महिला पात्र भूपसिंह की दूसरी पत्नी है। पहली पत्नी के बच्चा होने वाला था इसलिए भूपसिंह दूसरी औरत को नीचे से ऊपर पहाड़ पर ले आया था। शैला भेड़ चराती थी। वह भूपसिंह के लिए स्वेटर बुनती थी। वह उनके लिए फल, फूल और ईंधन लाती थी। जंगल में भूपसिंह उनसे मिलने आते थे। जब वह नहीं आते थे तब शैला दु:खी होती थी। उसके प्रति एकतरफा प्रेम करने वाला रूप भी उसको खुश नहीं कर पाता था।

इस कहानी को पढ़ने पर प्रतीत होता है कि पहाड़ की स्त्री अत्यन्त दयनीय स्थिति में है। उसको अपना पूरा जीवन पराश्रित होकर बिताना पड़ता है। वह भेड़-बकरी चराती है, जंगल से घास और ईंधन लाती है, खेती करती है तथा घर की देखभाल और परिवार का पोषण करती है। उसे कठोर परिश्रम करने पर भी अपना जीवन पुरुष पर आश्रित होकर और अपमान सहकर गुजारना पड़ता है। वैसे पहाड़ की स्त्री गोरी, सुन्दर, पुष्ट और स्नेहमयी होती है। वह मधुर कंठ से गीत गाती है। वह सच्चे मन से प्रेम करती है तथा किसी को धोखा नहीं देती है।

25. 'प्रेमघन की छाया स्मृति' नामक संस्मरण के लेखक शुक्ल जी ने उनकी विनोदप्रियता को भी उजागर किया है। बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' की विनोदप्रियता का उदाहरण पाठ के आधार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' जी की विनोदप्रियता तथा उनके कथनों में विलक्षण वक्रता रहती थी जिससे रोचकता की सृष्टी होती थी। ऐसी तीन घटनाएँ अग्रलिखित हैं–

(i) चौधरी साहब का नौकरों तक के साथ संवाद सुनने लायक होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से गिलास गिरता तो वे फौरन कहते-"कारे बचा त नाही" अर्थात् क्यों रे बचा तो नहीं।

(ii) एक दिन चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों तक बाल बिखेरे खंभे का सहारा लिए खड़े थे। वामनाचार्य गिरि मिर्जापुर के एक प्रतिभाशाली कवि थे जो चौधरी साहब पर एक छंद बना रहे थे

जिसका अंतिम चरण ही बनने को रह गया था। इस रूप में जब उन्होंने चौधरी साहब को देखा तो झट से छंद का अंतिम चरण बना डाला–"खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की।"

(iii) एक दिन रात को छत पर चौधरी साहब कुछ लोगों के साथ बैठे गपशप कर रहे थे, पास में लैम्प जल रहा था, अचानक बत्ती भकभकाने लगी। जब रामचंद्र शुक्ल ने बत्ती कम करने का मन बनाया तो उनके मित्र ने तमाशा देखने के विचार से रोक दिया। चौधरी साहब ने नौकर को आवाज लगाई-"अरे ! जब फूट जाई तबै चलत ने आवह।" अंत में चिमनी ग्लोब के साथ चकनाचूर हो गई पर चौधरी साहब का हाथ लैम्प की ओर न बढ़ा।

26. 'श्रीरघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हें दसकंठ न जानि परी' के काव्य-सौन्दर्य को उद्‌घाटित कीजिए।

उत्तर--- काव्य-सौन्दर्य (भाव-पक्ष)- राम का प्रताप तथा रावण की मूर्खता का चित्रण हुआ है। अगंद रावण की बुद्‌धि पर तरस खाता हुआ कहता है कि इतना सब कुछ हो गया और तुम्हें राम के प्रताप का बोध नहीं हुआ? समुद्र पर पुल बंध गया, तुम हनुमान को बांधकर रख नहीं पाए, तुम्हारी सोने की लंका जल गई–ये सब राम के प्रताप से ही तो संभव हो पाया है, पर तुम्हारी बुद्‌धि में यह बात नहीं आई। तुम तो दसकंठ हो अर्थात् तुम्हारे दस सिर हैं तो बुद्‌धि भी दस गुनी होनी चाहिए पर तुमने यह पूछकर कि राम का क्या प्रताप है, अपनी बुद्‌धिहीनता का ही परिचय दिया है। कला-पक्ष–कवि ने ब्रजभाषा में रचना की है। संस्कृत की तत्सम शब्दावली युक्त भावानुकूल भाषा है। इसमें सवैया नामक छन्द है। दसकंठ में व्यंजना का सौन्दर्य है। इसका व्यंग्यार्थ है रावण अत्यन्त मूर्ख है।

27. "आशा से ज्यादा दीर्घजीवी और कोई वस्तु नहीं होती।" सूरदास की मनःस्थिति के आधार पर इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर– सूरदास को झोंपड़ी में रखी हुई रुपयों की थैली की चिन्ता थी। वह सोच रहा था "रुपये पिघल भी गए होंगे तो चाँदी तो वहाँ पर ही होगी।" उसने इस आशा से उसी जगह, जहाँ छप्पर में थैली रखी थी, बड़े उतावलेपन और अधीरता से राख को टटोलना शुरू किया और पूरी राख छान डाली। उसे लोटा और तवा तो मिल गए परन्तु पोटली का कोई अता-पता न चला।।

झोंपड़ी के राख हो जाने पर भी सूरदास को रुपये नहीं तो चाँदी मिलने की आशा थी। उसके मन में यह आशा बनी रही और वह राख को बार-बार टटोलता रहा। उसके पैर आशारूपी इसी सीढ़ी पर रखे थे। पैर का सीढ़ी से फिसलना आशा की डोर का टूटना था। जब आशा पूरी तरह नष्ट हो गई तो उसका मन गहरी निराशा के गड्‌ढे में जा पड़ा। जब उसके मन से रुपये मिलने की आशा पूरी तरह मिट गई तो वह राख के ढेर पर बैठकर रोने लगा। आशा के दीर्घजीवी होने का अर्थ है कि आशा

मनुष्य के मन में लम्बे समय तक जीवित रहती है। काफी मुश्किलें आने पर भी वह आशा को नहीं छोड़ता। सवेरा होने पर वह फिर से राख को बटोरकर एक जगह करने लगा।

28. 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'दूसरा देवदास' कहानी में लेखिका 'ममता कालिया' ने हर की पौड़ी हरिद्वार की पृष्ठभूमि में युवा मन की भावुकता, संवेदना तथा वैचारिक चेतना को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी का नायक संभव दिल्ली का रहने वाला एम. ए. पास युवक है। माता-पिता ने उसे नानी के घर हरिद्वार भेजा है जिससे वह वहाँ जाकर गंगा के दर्शन कर ले और बेखटके परीक्षा में सफलता प्राप्त कर ले। इसी उद्देश्य से वह हर की पौड़ी पर स्नान करने आता है जहाँ पुजारी से चन्दन लगवाते समय उसकी भेंट पारो नामक लड़की से होती है। पुजारी भ्रम से उन दोनों को पति-पत्नी समझकर आशीर्वाद देता है। लड़की छिटककर उससे दूर खड़ी हो जाती है। दूसरे दिन वह घाट पर गया जहाँ उसकी भेंट पारो के भतीजे मन्नू से होती है। लौटते समय उसे वह लड़की दूसरी केबिलकार में अपने भतीजे मन्नू के साथ दिखाई देती है। मन्नू उनका परिचय कराता है ये हैं मेरी पारो बुआ और ये मेरे दोस्त ....'। 'संभव देवदास' कहकर संभव वाक्य पूरा करता है। वास्तव में वह पारो से प्रेम करने लगा है। यह पता चलने पर कि इस लड़की का नाम पारो है वह अपना नाम बताता है–संभव देवदास। कहानी में लेखिका के प्रेम के सच्चे स्वरूप को रेखांकित किया है।

29. 'अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान-गटी' इस पंक्ति के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– काव्य-सौन्दर्य (भाव-पक्ष)– यहाँ पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य की प्रशंसा तो है ही साथ ही यह भी व्यंजित है कि यहाँ ऋषि-मुनि, साधु-संन्यासी निवास करते हैं अतः पंचवटी में जो भी रहता है उसे इन सबका सत्संग सुलभ होता है। इनके द्वारा जो ज्ञान चर्चा यहाँ होती है उसका लाभ अनायास सबको मिलता है इसलिए पाप नष्ट हो जाते हैं और हृदय में ज्ञान प्रकट हो जाता है।

कला-पक्ष-- कवि ने यहाँ शिल्प चमत्कार दिखाया है। अघओघ की बेरी में रूपक. कटी बिकटी में सभंगपद यमक, बिकरी निकटी प्रकटी में पदमैत्री, ज्ञान गटी में रूपक अलंकार का सौन्दर्य है। केशवदास की भाषा ब्रजभाषा है तथा यहाँ सवैया छन्द का प्रयोग किया गया है। कवि ने शब्द चमत्कार दिखाने का प्रयास इस पंक्ति में किया है। 'टी' के प्रयोग से ध्वन्यात्मक सौन्दर्य प्रकट किया गया है।

30. यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी, किसके बारे में कहा गया है? क्यों? सूरदास के सन्दर्भ में आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- सूरदास बैठा रहा। लोग चले गए थे और धीरे-धीरे झोंपड़ी की आग ठंडी हो गई थी । तब वह उठा और अनुमान से द्वार की ओर से झोंपड़ी में घुसा। उसने उसी दिशा में राख को टटोलना शुरू किया, जहाँ छप्पर में पोटली रखी थी। निराशा, उतावलेपन और अधीरता से उसने सारी राख छान डाली परन्तु पोटली नहीं मिली।

उसने एक-एक कर रुपये जोड़े थे। उसने सोचा था कि उन रुपयों से वह गया जाकर अपने पितरों का पिंडदान करेगा। रोटी अपने हाथों से बनाते पूरा जीवन बीत गया। अब वह अपने पौत्र मिठुआ की शादी करेगा और चैन की रोटी खायेगा। झोंपड़ी जलने से उसके सारे अरमान ही जल गए थे। यह फूस की राख उसकी इन्हीं अभिलाषाओं की राख थी

31. असगर वजाहत की कहानी 'साझा' में हाथी ने किसान से गन्ने की फसल का बँटवारा कैसे किया? कहानी में 'हाथी' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए। .

उत्तर–'साझा' नामक लघु कथा असगर वजाहत द्वारा लिखी गई है जिसमें एक किसान और हाथी द्वारा साझे की खेती करने का उल्लेख है। दोनों ने 'गन्ने' की खेती साझे में की। किसान इसके लिये तैयार न था पर हाथी ने उसे ऐसी पट्टी पढ़ाई कि अन्ततः किसान साझे की खेती करने हेतु तैयार हो गया। हाथी जंगल में जाकर मुनादी करवा आया कि गन्ने का खेत उसका है अतः कोई जानवर उसे हानि पहुँचाने का दुस्साहस न करे अन्यथा ठीक न होगा।

फसल तैयार होने पर किसान हाथी को लेकर खेत पर गया और कहा कि आधी-आधी फसल बाँट लें, पर हाथी ने नाराज होकर कहा–हम दोनों ने मेहनत की है, मेरा-तेरा कैसा ? बस आओ मिलकर गन्ने खायें। यह कहकर हाथी ने एक गन्ना सैंड से तोड़ा तथा उसके दूसरे सिरे को आदमी को पकड़ाया। एक सिरे पर हाथी ने खाना आरम्भ किया। गन्ने के साथ जब आदमी भी हाथी की ओर खिंचने लगा तो उसने गन्ना छोड़ दिया। हाथी ने कहा देखो हमने एक गन्ना खा लिया। इस तरह हाथी खेत के पूरे गन्ने खा गया। इस कहानी में धनाढ्यों एवं पूँजीपतियों का प्रतीक है ।

32. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है ?

उत्तर-- 'उड़ते खग' एक माध्यम है जिसके द्वारा यह विशेष अर्थ व्यंजित होता है कि भारत शरण में आये हुए सभी लोगों की शरणस्थली है। यहाँ रंग, रूप, आकार, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, वेश-भूषा आदि के

आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता। इस देश में आकर सभी को शान्ति एवं सन्तोष प्राप्त होता है। यहाँ अनजान को भी सहारा प्रदान किया जाता है।

'बरसाती आँखों के बादल' से यह विशेष अर्थ व्यंजित होता है कि यहाँ के निवासी अपने दुःख से ही दुखी नहीं होते अपितु दूसरों के प्रति भी करुणा और सहानुभूति का भाव रखते हैं। वे दूसरों के दुःख से दुखी हो जाते हैं। करुणा भारतीय लोगों के हृदय का प्रमुख भाव है।

33. 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है? अपने विचार लिखिए। .

उत्तर-- प्रस्तुत पाठ 'सूरदास की झोंपड़ी' प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास 'रंगभूमि' का एक अंश है। सूरदास इसका मुख्य पात्र तथा नायक है। सूरदास अन्धा है, भिखारी है। वह अपना गुजारा भीख माँगकर करता है। वह फूस की झोंपड़ी में शांति से रहता है। वह किसी को सताता नहीं। अपने दयालु स्वभाव के कारण वह भैरों की पत्नी सुभागी को उसके पति की पिटाई से बचाता है। इस कारण उसको भैरों की दुश्मनी का शिकार बनना पड़ता है। भैरों उसकी झोंपड़ी जला देता है और रुपये चुरा लेता है। वह उसे रोता हुआ देखना चाहता है। फिर भी, सूरदास उसके प्रति दुर्भावना नहीं रखता।

सूरदास के माध्यम से प्रेमचंद संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य को निराशा, अवसाद और ग्लानि से बचना चाहिए। उसे दूसरों पर दोषारोपण न करके स्वयं अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर. भरोसा रखना चाहिए। मनुष्य को आशा की भावना नहीं त्यागनी चाहिए। उसे आत्म-विश्वास की भावना के साथ कठोर श्रम करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।